B- 4
L- 19
W: G.

Scanned by CamScanner

जलधारा :-

महासागरों में लम्बी दूरी तक सुनिश्चित दिशा में संकरे क्षेत्र में जल के प्रवाह को जलधारा कहा जाता है।

- जलधाराओं के निर्माण के पीछे अनेकों कारण होते हैं जिनमें कुछ कारण सागर के बाहर (पवन, दाब, वर्षण इत्यादि) से होते हैं और कुछ कारण महासागरों के अन्दर (लवणता तापमान, घनत्व इत्यादि) से होते हैं।

- जलधाराओं का वर्गीकरण इनकी स्थिति के आधार पर होता है जिनमें दो प्रकार की जलधाराएँ होती हैं -
  (i) सतही जलधारा
  (ii) गहरी सागर जलधारा

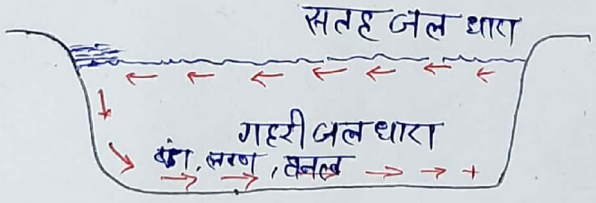

- अवस्थिति के अलावा महासागरीय धाराओं को इनके तापमान के आधार पर गर्म व ठंडी जल धाराओं में वर्गीकृत किया जाता है।

Scanned by CamScanner

• जिन स्थानों पर धारा में प्रवाहित जल का तापमान आस-पास के जल के तापमान से अधिक होता है ऐसी जलधाराको गर्म जलधारा कहते हैं। जैसे → उ० एवं द० विषुवतीय जल धारा.

• इसके विपरीत जब प्रवाहित जल का तापमान आस-पास के जल के तापमान से कम होता है तो ऐसी जल धारा को ठंडी जलधारा कहते हैं। जैसे- कनारी जल धारा

प्रश्न → महासागरीय जलधाराएँ क्या होती हैं और इनका तटीय क्षेत्रों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

- जलवायु प्रभाव
- मत्स्यपालन के लिए अनुकूल
- नौवहन के लिए सुलभ
- पृथ्वी के ऊष्मा बजट का संतुलन
- जैव विविधता

KGS IAS
KHAN GLOBAL STUDIES
Most Trusted Learning Platform
KHAN SIR

Scanned by CamScanner